International Journal of Global Science Research **ISSN: 2348-8344 (Online)**
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321 **DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268**
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

शोध पत्र

कृषि आधारित उद्योगों की समस्यायें एवं संभावनाओं का अध्ययन, "उमरिया जिले के विशेष सन्दर्भ में

हिना फिरदौस एवं सीमा बड़गइया
वाणिज्य विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)
Corresponding Author Email: pandey.lalan@gmail.com

Received: 25/02/2024
Revised: 31/02/2024
Accepted: 08/03/2024

सारांश

भारत में कृषि आधारित उद्योगों का आशय इस प्रकार के उद्योग से है जिनमें कृषि उत्पादों का उपयोग किया जाता है। कृषि आधारित उद्योगों में पेड़–पौधों पर आधारित कृषि कच्चे माल के साथ–साथ कृषि इनपुट को प्रयोग की जाने वाली सभी क्रियाओं को शामिल किया जाता है। प्राचीन समय पर देश में कम पूंजी, आधाभूत संरचना विपणन आदि की कमी के बाद भी हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत थी। देश में मुगलों का शासन एवं अंग्रेजी दासता के कारण कृषि उद्योगों की स्थिति दयनीय हो गयी थी। भारत के शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं के द्वारा धीरे–धीरे विकास हो रहा है। हमारे देश में सकल घेरलू उत्पाद का 17 प्रतिशत एवं जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम है। कृषि आधारित उद्योगों में चावल, दाल, तेल आदि उद्योग आते है। इस शोधपत्र में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श विधि से कृषि उद्योग के संचालकों को शामिल किया गया है। परिकल्पना क्रमांक 1 व 3 असत्य एवं परिकल्पना क्रमांक 02 सत्य पायी गयी है।

मुख्य शब्द – उद्योग, कृषि उत्पाद, विपणन, बेरोजगार, अर्थव्यवस्था प्रसंस्करण, कार्यशील पूजीं, उदारीकरण, भण्डारगृह, मुगल शासन।

प्रस्तावना

भारत में कृषि आधारित उद्योगों का आशय ऐसे उद्योगों से है जिनमें कृषि उपज या उत्पादों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध होता है। कृषि आधारित उद्योगों में पेड़ पौधों एवं पशु आधारित कृषि कच्चे माल के साथ–साथ कृषि इनपुट को प्रयोग की जाने वाली क्रियाओं गतिविधियों एवं सेवाओं को शामिल किया जाता है जिसके अंतर्गत कृषि की प्राथमिक क्रियाओं, द्वितीयक (विनिर्माण) की क्रियाओं के साथ तृतीयक क्रियाओं को भी शामिल किया जाता है।

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268

कृषि पर आधारित उद्योग, हमारे देश(iv) के परम्परागत उद्योगों में कुटीर व लघु उद्योगों के रूप में किया जाता था। प्राचीन(v) समय पर बहुत कम पूंजी, यातायात के साधन व आधारभूत संरचना कम होने के बावजूद भी देश की अर्थव्यवस्था एवं समाज(vi) के लोग आत्मनिर्भर थे। हमारे देश में मुगलों का शासन की स्थापना होने के पश्चात से ही कृषि पर आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास में धीरे–धीरे कमी होने लगी एवं अंग्रेजी दासता के आते–आते अत्यन्त ही दयनीय स्थिति होने के कारण से पहला तो लोग बेरोजगार हो गये दूसरी ओर देश की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गयी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शासन की विभिन्न नीतियों पंचवर्षीय योजनाओं एवं अन्य प्रोत्साहन योजनाओं के परिणामस्वरूप कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों में धीरे–धीरे विकास हो रहा है।

कृषि आधारित उद्योगों की विशेषताएं

कृषि आधारित उद्योगों की विशेषताएं निम्नानुसार हैं–

(i) भारत में कृषि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 17 प्रतिशत है एवं लगभग 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या को प्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराता है।

(ii) भारत गेहूँ, चावल, फल, कपास, गन्ना, सब्जियों के साथ–साथ चाय व काफी का भी पर्याप्त मात्रा में उत्पादन करना है जो कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किये जाते है और प्रसंस्करण करके विपणन योग्य वस्तुओं में परिवर्तित किया जाता है।

(iii) चावल मिलों आटा मिलों फल एवं सब्जी प्रसंस्करण इकाइयां आदि इकाइयों को खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में शामिल किया जाता है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का प्रमुखतः कच्चा माल कृषि उत्पादों से प्राप्त होता है।

गुड़ एवं शक्कर आदि मिले मौसमी होती है अतः कच्चा माल के लिए अधिक कार्यशील पूंजी की आवश्यकता होती है।

कृषि आधारित उद्योगों के लिए शासन द्वारा नियमानुसार छूट प्राप्त की जा सकती है।

कृषि आधारित प्रमुख उद्योगों की सूची

कृषि आधारित प्रमुख उद्योगों की सूची निम्नानुसार है :–

(i) कपड़ा उद्योग
(ii) पापड़ उद्योग
(iii) चावल मिल
(iv) मशाला उद्योग
(v) अचार उद्योग
(vi) तेल मिल
(vii) जैम व जैली उद्योग
(viii) पाम तेल उद्योग
(ix) दालें एवं अनाज प्रसंस्करण उद्योग
(x) चीनी उद्योग आदि।

उद्देश्य – उमरिया जिले में कृषि आधारित उद्योग की समस्यायें एवं सम्भावनाओं का अध्ययन।

चर – प्रस्तुत शोध पत्र में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है :–

(i) स्वतंत्र चर – इसके अंतर्गत, सरकारी नीतियां, औद्योगिक नीतियां, उदारीकरण, छूट, ग्राण्ट आदि।

(ii) परतंत्र चर – इसके अंतर्गत मांग एवं पूर्ति के घटक, बाजार साम्य, वस्तु विपणन, कृषकों की आय का स्तर एवं लिंग आदि।

उपकरण –

इस शोध–पत्र में उपकरण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में कृषि पर आधातिर उद्योगों के लिए कच्ची सामग्री, पूंजी, संचार, यातायात, भण्डारगृह आदि समस्याओं एवं कृषि उद्योग से रोजगार प्राप्त की संभावना

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268

खाद्य प्रसंस्करण से बाजार व विपणन में वृद्धि आदि प्रश्नों को शामिल किया गया है।

शोध प्रविधि –

कृषि आधारित उद्योग एवं संचालकों का चयन न्यादर्श विधि से किया गया है। कृषि आधारित उद्योगों में न्यादर्श विधि से चावल मिल, दाल मिल, तेल मिल, आटा मिल, अचार उद्योग, फल एवं सब्जियों आदि से संबंधित उद्योगों को लिया गया है। न्यादर्श में 100 कृषि उद्योग संचालकों को शामिल किया गया है।

सीमांकन –

इस शोध पत्र में केवल उमरिया जिले की सीमा में स्थापित कृषि आधारित उद्योगों एवं उनके संचालकों का चयन किया गया है।

परिकल्पना –

प्रस्तुत शोध–पत्र में निम्नलिखित परिकल्पना है –

(1) उमरिया जिले में कृषि आधारित उद्योगों के लिए कृषि उत्पाद का उत्पादन पर्याप्त नहीं है।

(2) उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए बाजार की कोई समस्या नहीं है।

(3) उमरयिा जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए यातायात की समस्या है।

परिणामों का विश्लेषण –

इस शोध–पत्र में उमरिया जिले में कृषि आधारित उद्योगों की समस्यायें एवं सम्भावनाओं से संबंधित एकत्रित सर्वेक्षित आकड़ों से प्राप्त सांख्यकीय विश्लेषण निम्नानुसार है।

सारणी क्रमांक –01 उमरिया जिले में कृषि आधारित उद्योगों के लिए कृषि उत्पाद की पर्याप्तता के संबंध में उद्योग संचालकों से प्राप्त मत का विवरण।

क्र.	कृषि आधारित उद्योगों के नाम	सहमत	न तो सहमत एवं न तो असहमत	असहमत	योग
1	आटा मिल/उद्योग	89	2	9	100
2	चावल मिल/उद्योग	92	1	7	100
3	तेल मिल/उद्योग	85	3	12	100
4	पशु आहार उद्योग	91	1	8	100
5	फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग	83	3	14	100
	समान्तर माध्य	**88**	**2**	**10**	**100**

स्रोत – सर्वेक्षित आकड़ें

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के संचालकों के द्वारा कृषि उत्पाद की पर्याप्तता के संबंध में सहमत के लिए सबसे अधिक चावल उद्योग के लिए, दूसरे स्थान पर पशु आहार उद्योग के लिए, तीसरे स्थान पर आटा उद्योग के लिए, चौथे स्थान पर तेल उद्योग के लिए, पांचवे व अंतिम स्थान पर फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग के लिए कृषि उत्पाद प्राप्त होते है। प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर औसतन सहमत के लिए लगभग 88 प्रतिशत, न तो सहमत एवं न तो असहमत के लिए औसतन 2 प्रतिशत एवं असहमत के लिए 10 प्रतिशत संचालकों ने अपना उत्तर दिया है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है। कि कृषि आधारित उद्योगों के लिए उमरिया जिले में वृद्धि उत्पाद का उत्पादन पर्याप्त होता है।

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268

सारणी क्रमांक – 02 उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए बाजार के संबंध में वितरण

क्र	कृषि आधारित उद्योगों के नाम	मांग की पर्याप्तता		उधारी की समस्या		अधिक डूबत ऋण की समस्या	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	आटा मिल/उद्योग	87	13	32	68	84	16
2	चावल मिल/उद्योग	84	16	29	71	86	14
3	तेल मिल/उद्योग	78	22	26	74	79	21
4	पशु आहार उद्योग	82	18	36	64	78	22
5	फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग	81	19	23	77	83	17
	समान्तर माध्य	82.4	17.6	29.2	70.8	82	18

स्रोत – सर्वेक्षित आकड़े

सारणी क्रमांक 02 के अध्ययन से स्पष्ट है कि उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के संचालकों के द्वारा बाजार के संबंध में मांग की पर्याप्तता के लिए हां के लिए सबसे अधिक आटा उद्योग एवं सबसे कम तेल मिल/उद्योग के लिए उत्तर प्राप्त हुआ है। उधारी की समस्या के लिए हां के लिए सबसे अधिक पशु आहार उद्योग तथा सबसे कम के लिए फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग के लिए उत्तर प्राप्त हुआ है। मांग की पर्याप्तता के लिए औसतम हाँ के लिए 82.4 प्रतिशत एवं नहीं के लिए 17.6 प्रतिशत, उधारी की समस्या के लिए हां के लिए 29.2 प्रतिशत एवं नहीं के लिए 70.8 प्रतिशत, अधिक डूबत ऋण की समस्या हां के लिए 82 प्रतिशत एवं नहीं के लिए 18 प्रतिशत उत्तर प्राप्त हुआ है। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए बाजार की कोई खास समस्या नहीं है।

सारणी क्रमांक – 03 उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए यातायात के संबंध में विवरण

क्र.	कृषि आधारित उद्योगों के नाम	खराब सड़क		अधिक लागत		वाहन की समस्या	
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं
1	आटा मिल/उद्योग	18	82	42	58	36	64
2	चावल मिल/उद्योग	16	84	39	61	37	63
3	तेल मिल/उद्योग	21	79	44	56	39	61
4	पशु आहार उद्योग	19	81	41	59	34	66
5	फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग	22	78	43	57	35	65
	समान्तर माध्य	19.2	80.8	41.8	58.2	36.2	63.8

स्रोत – सर्वेक्षित आकड़े

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268

उर्पयुक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के संचालकों के द्वारा यातायात के संबंध में खराब सड़क के लिए हां के लिए सबसे अधिक फल एवं सब्जियों पर आधारित उद्योग एवं सबसे कम चावल उद्योग के लिए उत्तर प्राप्त हुआ है। अधिक लागत के लिए हां के लिए तेल उद्योग एवं सबसे कम चावल उद्योग के लिए उत्तर प्राप्त हुआ है। वाहन की समस्या के लिए हां के लिए तेल उद्योग एवं सबसे कम पशु आहार उद्योग के लिए उत्तर प्राप्त हुआ है। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए यातायात की समस्या नहीं है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

(1) उमरिया जिले में कृषि आधारित उद्योगों के लिए कृषि उत्पाद का उत्पादन पर्याप्त नहीं है यह परिकल्पना असत्य पायी गयी है। (सारणी क्रमांक 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है)

(2) उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए बाजार की कोई समस्या नहीं है, यह परिकल्पना सत्य पायी गयी है। (सारणी क्रमांक 02 के विश्लेषण से स्पष्ट है।) (2)

(3) उमरिया जिले के कृषि आधारित उद्योगों के लिए यातायात की समस्या है, यह परिकल्पना असत्य पायी गयी है।(3) (सारणी क्रमांक 3 के विश्लेषण से स्पष्ट है।)

निष्कर्ष – (4)

कृषि आधारित उद्योगों के अंतर्गत ऐसे उद्योगों को शामिल किया जाता है जिनमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादों को शामिल किया गया है। इन उद्योगों में कृषि की प्राथमिक क्रियायें विनिर्माण की क्रिया तथा सेवा से सम्बंधित क्रियायें शामिल होती है। मुगलों के आक्रमण के पूर्व हमारा देश सोने की चिड़िया कहीं जाती थी क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था में कुटीर व लघु उद्योगों के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर देश की सकल राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में मदद करता है। मुगलों एवं बिट्रिश शासन काल में कृषि उत्पाद को समाप्त एवं परिवर्तित करने से देश में चल रहे लघु एवं कुटीर उद्योगों का पतन हुआ और बेरोजगारी की समस्या लागत आदि की समस्या उत्पन्न हुई। स्वतंत्रता के पश्चात सरकार के द्वारा कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों को विकास करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं प्रोत्साहन योजनाओं आदि के द्वारा कृषि आधारित उद्योगों में कपड़ा उद्योग, पापड़, उद्योग एवं अचार उद्योग आदि आते है। इस शोध पत्र में स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। परिकल्पना क्रमांक 1 व 3 असत्य एवं परिकल्पना क्रमांक 2 सत्य पायी गयी है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

ओझा, एस. के. (2019) कृषि प्रौद्योगिकीः बौद्धिक प्रकाशन पेज 308।

गौतम, ऋतुराज (2012) जैविक खेती से पर्यावरण संरक्षण शोध पत्रिका रिसर्च डिस्कभरः वाल्यूम vi पेज 134 से 136।

सोनी, अशोक (2011) मध्यप्रदेश में कृषि उद्योग एवं आर्थिक विकास, शोध पत्रिका ए जर्नल ऑफ एशिया फॉर डेमोकेशी एण्ड डवलप्मेंटः वाल्यूम 4 पेज 170 से 175 तक।

ओझा, प्रवीण (2016) नवीन आर्थिक नीतिः शोध पत्रिका ए जर्नल ऑफ एशिया फॉर डेमोकेशी एण्ड डवलपमेंटः वाल्यूम vii 1 पेज 124 से 126 तक।

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 1, April 2024, pp. 2316-2321
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v11.i1.2024.268

शुक्ला, बिन्दु (2016) विश्व व्यापार संगठन और भारतीय कृषि; शोध प्रत्रिका समाज वैज्ञानिकी।

शुक्ल एवं सहाय (2019) साख्यिकी के सिद्धांतः साहित्य भवन पब्लिकेशन पेज 184 से 188 तक।

गुप्ता, बी.एम. (2017) साख्यिकी के सिद्धांतः एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस पेज 41 से 46 तक।